देशज संस्कृति, भाषा और जेण्डर पर तीन दिवसीय व्याख्यानमाला

दिनांक 8-10 अगस्त 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग में "देशज संस्कृति, भाषा और जेण्डर" (Indigenous Culture, Language and Gender) विषय पर तीन दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें IIIT हैदराबाद के वरिष्ठ प्रोफेसर नन्द किशोर आचार्य ने तीनों दिन तक क्रमशः संस्कृति,भाषा और जेण्डर पर अपना वक्तव्य दिया। स्वागत उद्बोधन स्त्री अध्ययन विभाग के वरिष्ठ पीएच.डी. शोधार्थी मनोज द्विवेदी ने किया। अंतरराष्ट्रीय देशज दिवस (9 अगस्त) के पूर्व संध्या पर इसके आयोजन ने इसे और भी महत्वपूर्ण बना दिया। व्याख्यान के पहले दिन उन्होंने संस्कृति पर अपनी बात रखते हुए कहा कि संस्कृति कृति, प्रकृति से बनती है। साथ ही उन्होंने डार्विन के विकासवाद को उनकी पुस्तक "*Descent of Man*" के माध्यम से समझाते हुए कहा कि डार्विन का विकासवाद मनुष्य को जैविक जीव ही नहीं बल्कि परिष्कार करने वाला जीव बताता है अथवा वह सिर्फ जैविक नहीं है उसमें चेतना भी आई है जिससे वह अपनी जरूरत के अनुसार प्रकृति का परिष्करण करता रहा है। प्रकृति के साथ मानव स्वयं को अपनी चेतना के माध्यम से रूपांतरित या परिष्कृत करता है, वह संस्कृति का रूप लेती है। भारतीय संस्कृति पर अपना विचार रखते हुए उन्होनें कहा कि भारतीय संस्कृति विभिन्न संस्कृतियों का समुच्चय है और सभी संस्कृतियोंकी कुछ सामान्य विशेषताओं को मिला कर एक एकीकृत भारतीय संस्कृति बोलते हैं। आचार्य जी ने "संस्कृति की व्याख्या" (देवराज द्वारा लिखित) पुस्तक का उल्लेख करते हुए बताया 'संस्कृति एक प्रकार की मूल्य साधना है व सभ्यता उसका मूल्य साधनात्मक रास्ता है। देवराज द्वारा प्रतिपादित 'सृजनात्मक मानववाद का सिद्धांत' पर बात की और कहा कि संस्कृति मूलतः नैतिकवादी साधना है। नंदकिशोर आचार्य के शब्दों में "संस्कृति हमारी आंतरिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती है तथा संस्कृति का निर्माण अपना आत्मविकास करना भी है"। यशदेव शल्य को उद्धरित करते हुए उन्होंने कहा कि चेतना का आत्मविमर्श ही संस्कृति है। नैतिकता के बारे में कहा कि हमें लौकिक व आध्यात्मिक दोनों नैतिकताओं को मानना होगा। उनके अनुसार नैतिकता उभयनिष्ठ होती है और जब मनुष्य अपने नैतिक परिवेश व प्राकृतिक परिवेश के प्रति नैतिक व्यवहार करता है तो तभी संस्कृति कि निर्मित होती है अगर हमारा व्यवहार नैतिक नहीं होगा तो वह कुसंस्कृति का निर्माण होगा।

संस्कृति पर हेगेल के विचार व्यक्त करते हुए उन्होनें कहा "हेगेल संस्कृति को जातीय व सार्वभौमिक दो भागों मे बाँटा हैं और कहा कि एन्द्रिक संतुष्टि व उपभोग को बढ़ाने वाली सभ्यता एक आयामी सभ्यता बताया है।पहले दिन के व्याख्यान में अंतिम चरण में उन्होंने चंदा समिति 1960 की सिफारिशों पर भी प्रकाश डाला।

तीन दिन तक चलने वाले इस व्याख्यान में अगले दिन 9 अगस्त को दूसरे व्याख्यान का विषय 'भाषा' पर था। भाषा के विभिन्न पक्षों पर बात करते हुये उन्होंने भाषाओं के विलोपीकरण पर चिंता व्यक्त की और कहा कि राज्य को अधिक से अधिक भाषाओं मे शिक्षा देनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने पापुआ न्यूगिनी का उदरहरण दिया जहाँ 50 लाख की जनसंख्या पर 850 भाषाएँ हैं और वहाँ 470 भाषाओं मे शिक्षा दी जाती है। भाषा पर विचार रखते हुये कहा कि भाषा संप्रेषण का माध्यम तो है ही लेकिन उसके पहले यह विचार का माध्यम है क्योंकि की कुछ भी बोलने से पहले हम अपने अंदर विचार करते हैं। साथ ही भाषा को संबंध, पहचान, विचार व जानने का माध्यम बताया और कहा कि भाषा में होना ही परंपरा में होना है। वक्ता ने 2009 में प्रकाशित डाटा बेस एथनोलौग के आँकड़ो के माध्यम से बताया कि हमारे यहाँ 6909 भाषायें हैं और स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक हम 220 भाषाओं को नष्ट कर चुके हैं। भाषाओं के नष्ट होने का एक कारण उन्होंने विस्थापन बताया। नंदकिशोर जी ने अपनी भाषा भूलने को आत्मविस्मृति के कुएं में गिरने जैसा बताया। एक भाषा-भाषी समूह को दूसरे समूह में ब्लात मिलाना भाषा की जाति (Linguistic Ethnocide) हत्या है। वर्तमान समय में भाषा पर बात करते हुये उन्होंने कहा कि आज हम अपनी मूल भाषा को छोड़कर दूसरी भाषा (अंग्रेज़ी) सीखने की कोशिश करते हैं इसके कारण उन्होंने हिन्दी के प्रति उपेक्षाभाव को बताया जिसे हमें आज ख़त्म करने की जरूरत है, उदाहरणस्वरूप कुछ स्कालर्स के नाम बताए जो अंग्रेज़ी मे पारंगत होने के बावजूद हिन्दी में लेखनकार्य करते हैं। भाषा पर अपने व्याख्यान के दौरान वक्ता ने कहा अगर हम अपने बालकों का पूर्ण मानसिक विकास चाहते हैं तो हमें उन्हें उनकी मूलभाषा में शिक्षा देनी चाहिए। इसका कारण उन्होंने बताया कि आजतक जितने भी अच्छे ग्रंथ लिखे गए हैं अपनी मूलभाषा में ही हैं। अतः हमें अपनी मूलभाषा नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि हम अपनी मूलभाषा में बेहतर तरीके से सोच-समझ और व्यक्त कर सकते हैं।

तीसरे और अंतिम दिन नंदकिशोर आचार्य जी ने देशज संस्कृतिके जेण्डर पक्ष पर बात करते हुए बताया कि किसी भी समाज या युग की प्रगति के बारे में जब बात होती है तो सबसे पहले उस समाज या युग में महिलाओं की स्थिति की जाँच पड़ताल की जाती है। ऐसा इसलिए है कि सारे मनुष्य समान हैं इसलिए उन्हें हम अलग कर नहीं देख सकते। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्कृति की बुनियादी पहचान स्त्री और पुरुष के बीच के भावात्मक संबंध है और जहाँ पर उच्छवाच्च संबंध या प्रभुता का संबंध होगा तो हमें यह मानना चाहिए कि उस संस्कृति में विकृति हैं। आचार्य जी के अनुसार इसी आधार पर देशज संस्कृति को देखें तो मोटे तौर पर हमें पढ़े-लिखे और तथाकथित सभ्य समाज से अधिक स्त्री पुरुष समानता देखने को मिलेगी। किसी समाज के विकास की स्थिति को देखने के लिये स्त्री-पुरुष अनुपात देखा जाता है। अगर 2011 की जनगणना के आँकड़े देखें तो हमारे शहरी समाज से जहाँ 1000 पुरुषों पर 943 स्त्रियाँ हैं जबकि देशज समुदाय में 1000 पुरुषों पर 990 महिलाएँ हैं। यह तब है जब आदिवासियों मे मृत्यु दर (स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के कारण प्रसव के समय होने वाली मौतों के कारण) अधिक है। अगर हम विकास के इस पैमाने को मानें तो आज भी वो हमसे अच्छे हैं। देशज समुदाय में हमें भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियाँ भी नहीं दिखाई पड़ती हैं। अपने वक्तव्य उन्होंने आदिवासी समुदाय की भूमि अधिग्रहण तथा उनके विस्थापन को भी गलत बताया और कहा कि ज़मीन का कोई मुआवजा हो ही नहीं सकता क्योंकि जमीन ही एकमात्र ऐसी सम्पति है जो हमे दो तीन पीढ़ियों तक भी आमदनी देती रहती हैं अतः उसके क्या मुआवजा हो सकता है ? आचार्य जी ने विस्थापन पर बात करते हुए कहा कि सामान्यतः किसी भी राज्य से बाहर जाने वालों में पुरुषों की संख्या ज्यादा होती है लेकिन झारखंड से महिलाएँ ज्यादा बाहर जाती हैं इसका कारण उन्होंने साधनों के अभाव में महिलाओं को बेचा जाना बताया यह उन राज्यों मे बेचीं जाती हैं जहाँ स्त्री-पुरुष अनुपात कम है और सिर्फ एक बार ही नहीं बेची जाती हैं बल्कि कई हाथों मे बेचीं जाती हैं। वक्ता ने चमन लाल एक पुलिस अफसर और मानवाधिकार कार्यकर्ता की झारखंड पर रिपोर्ट की संस्तुतियों पर भी बात की जिसमें झारखंड की महिलाओं के बाहर जाने के कारणों का उल्लेख था। इसमें चमन लाल ने बताया कि झारखंड जाने वाले सरकारी अधिकारी भी महिलाओं को बाहर भेजते हैं तथा अपनी जैविक जरूरतों को पूरा करने के लिए शादी भी कर लेते हैं किन्तु बाद में छोड़ देते हैं। देशज समुदाय के महिलाओं की बुरी स्थिति का कारण विकास के कारण उनकी संस्कृति में होने वाले हस्तक्षेप को माना है। नंदकिशोर जी ने वैरियर एल्विन को उद्धृत करके कहा कि आदिवासियों को शहरों से दूर रखो। अंत मे उन्होंने कहा कि हमें उनकी संस्कृति मे कम-से-कम हस्तक्षेप करना चाहिए। व्याख्यान के बाद औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्षा डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया। यह व्याख्यान कार्यक्रम सभी श्रोताओं के लिए अत्यंत लाभप्रद रहा।